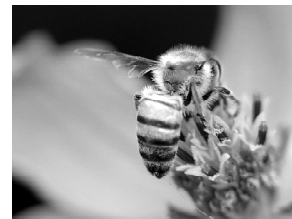


# जीव-जंतु भी करते हैं नशा

नरेंद्र देवांगन



**म**धुमक्खियां भांग व मैरीजुआना जैसे नशीले पौधों को बेहद पसंद करती हैं। बारहसिंगा से लेकर हाथियों तक जीव-जंतुओं की दुनिया ऐसे जानवरों से भरी पड़ी है, जो इस तरह के पौधे या कीड़े-मकोड़े जानबूझकर खाते हैं जिनमें हैल्यूसिनोजेनिक रसायन ज्यादा मात्रा में पाए जाते हैं।

बारहसिंगा को *एमैनिटा मसकैरिया* नामक नशीला मशरूम पसंद है। यह मशरूम साइकोएक्टिव प्रकार की औषधि है जिस पर सफेद फंगस लगा रहता है। इसको फ्लाई एगैरिक के नाम से भी जाना जाता है। जानकारों का कहना है कि इसको खाने के बाद बारहसिंगा जब जंगल में कूदते-फांदते हुए दौड़ता है, तो उसे ऐसा एहसास होता है कि वह उड़ रहा है।

लोकोवीड लगभग 20 प्रकार के जंगली पौधों का एक समूह है, जो पश्चिमी अमरीका में पाया जाता है। यह पौधा जाड़ों में पनपता है और घोड़ों का पसंदीदा भोजन है। एक-दो बार इसको खाने के बाद घोड़े इसके आदी हो जाते हैं और बार-बार इसे खाने के लिए आते रहते हैं। इस ज़हरीले पौधे की लत इन घोड़ों को इस कदर लगती है कि वे इसे तब तक खाते रहते हैं जब तक कि वे मर न जाएं।

लोकोवीड के नशे के कारण घोड़े हिनहिनाते रहते हैं और साथ ही जबड़े को भी खोलते व बंद करते रहते हैं। जो घोड़े इसे अधिक मात्रा में खा लेते हैं उनको या तो डायरिया हो जाता है या वे डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं।

मधुमक्खी व बरैया जैसी प्रजातियां सड़े हुए फलों का रस पीती हैं। इस तरह का रस पीने वाली मक्खियां हिंसक, असामाजिक व उड़ने की कम शौकीन होती हैं। जो मक्खियां ज्यादा रस पी लेती हैं उन्हें अक्सर पैरों को ऊपर उठाकर ज़मीन पर पीठ के बल लेटा देखा जा सकता है।

*एनिमल प्लेनेट* के अनुसार बंदरों जैसी दिखने वाली एक प्रजाति काले लीमर अपने दांतों की सहायता से बड़े-

बड़े कनखजूरों को उनके सिर की तरफ से कुतर डालते हैं जबकि कनखजूरे बहुत ज़हरीले होते हैं। कनखजूरा अपने बचाव में सायनाइड जैसे ज़हरीले रसायन शरीर से बाहर निकालने लगता है। यदि यह रसायन लीमर के शरीर के भीतर पहुंच जाए तो घातक हो सकता है। लेकिन लीमर पहले ही चालाकी से कनखजूरे का सिर दांतों से कुतर डालता है। इस प्रकार विषैला रसायन सिर्फ लीमर के शरीर पर ही लग पाता है जिससे लीमर को हल्का नशा-सा होने लगता है। तनाव के दौर से निबटने के लिए लीमर इस नशे का अक्सर प्रयोग करते हैं।

लाइकेन की एक प्रजाति बहुत दुर्लभ होती है और धीरे-धीरे बढ़ती है। यह इतनी दुर्लभ है कि कभी-कभी चट्टानी पहाड़ों के ढेर में किसी एक ही चट्टान पर उगती है। लेकिन यह जानते हुए भी कि इस प्रकार की लाइकेन को पाना आसान नहीं और इसमें कोई पोषक तत्व भी नहीं, भेड़ें अपनी जान जोखिम में डालकर इसको ढूंढती हैं। एक बार लाइकेन तक पहुंचने के बाद भेड़ें इसको अपने दांतों से कुरेद-कुरेद कर तब तक खाती रहती हैं जब तक यह चट्टान से पूरी तरह साफ न हो जाए।

रैवन, जे ब्लैकबर्ड व तोते जैसे पक्षी चींटियों को मसल कर अपने पंखों में दबा लेते हैं। पक्षियों के व्यवहार का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों ने पहले यह सोचा कि चींटियों से निकलने वाले फॉर्मिक अम्ल को पाने के लिए पक्षी ऐसा करते हैं ताकि अपने शरीर से परजीवियों का सफाया कर सकें। पक्षियों के व्यवहार के बारे में ऐसी सोच तब तक कायम रही जब तक वैज्ञानिकों ने मैना के अजीब व्यवहार पर शोध नहीं किया। मैना कीड़ों को तंबाकू की राख पर मसलने के बाद ही अपने शरीर पर लगाती है। वैज्ञानिकों ने पक्षियों के इस अजीब व्यवहार को देखकर नतीजा निकाला कि पक्षियों को ऐसा करने से आनंद प्राप्त होता है। इस अजीब नशे के लिए पक्षी कई तरीकों का

इस्तेमाल करते हैं और इसके आदी भी हो जाते हैं।

जब अफ्रीका के जंगलों में मैरूला नामक फल पक जाता है तो ऐसा लगता है कि सारी कुदरत मैरूला के पेड़ों के पास जमा हो गई है। लेकिन यहां इस पके हुए फल को कोई जानवर नहीं खाता बल्कि वे इसके ज़मीन पर गिरने के बाद सड़ जाने तक इंतज़ार करते हैं। हाथी, बंदर व अन्य प्रकार के स्तनपायी जानवर इन सड़े हुए फलों को खाने के बाद या तो आपस में झगड़ा करते हैं या फिर अपने सहचर के साथ संभोग। इसके बाद वे तब तक ज़मीन पर पड़े रहते हैं, जब तक फल के नशे का असर खत्म न हो जाए।

बकरियां बहुत उत्साह से कॉफी बीन्स खाती हैं और सुअर भांग के बीज खाकर मस्त रहते हैं। जगुआर भी एक खास तरह के पौधे की बेल खाकर झूमता रहता है। चींटियों का झुंड हमेशा एकेसिया के पेड़ की रक्षा करता है, क्योंकि इस पेड़ से चींटियों को एक मीठा सीरप मिलता है। कैटनिप नामक पौधे को खाने के बाद बिल्लियां मस्ती के चरम पर पहुंच जाती हैं और इधर-उधर उछलकूद करने लगती हैं। जिस तरह की दुनिया में ये जीव-जंतु रहते हैं उसको देखते हुए अगर ये अपने आनंद की तलाश इस तरह से करते हैं तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। **(स्रोत फीचर्स)**